अध्ययन 5

प्रार्थनाः
द्वि मार्गीय वार्त्तालाप

हम क्यों प्रार्थना करते हैं ?

साधारण तौर से प्रार्थना परमेश्वर से बात करना तथा परमेश्वर की बातों को सुनना है। हमें प्रतिदिन समय निकालना चाहिए परमेश्वर की खोज के लिये तथा उसे प्रार्थना करने के लिये। यह हमें परमेश्वर के साथ सम्बन्ध बनाये रखने में तथा विकास में योग्य बनाएंगे क्योंकि हम समय निकाल कर संचार कायम करेंगे। वह चाहता है कि हम उस से सहायता मांगे तथा वह हम से बातचीत करना चाहता है। परमेश्वर हम से प्रेम रखता है और हमारा ख्याल रखता है।सचमुच उसने प्रतिज्ञा किया हमें कभी नहीं छोड़ेगा न व्यागेगा। (देखे इब्रानियों 13:5) ज्यो ज्यो आप का सम्बन्ध परमेश्वर के साथ बढ़ते जाता है आप के प्रार्थना जीवन के द्वारा, आप आश्चर्य करने लगेंगे कि उसके बिना आप ने पहले कैसा समय बिताया।

यीशु कहां उपयुक्त है ?

परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह हमारे समान मनुष्य था, हमारे समान सब प्रकार की समस्या तथा परीक्षाओं में पड़ा । इसलिये, वह समझ सकता है कि हमें क्या जरुरत है । (देखें इब्रानियों 4:15) इस समय वह परमेश्वर के दहिने हाथ बैठे निवेदन (प्रार्थना) कर रहा है हम सब के लिये । (देखे रोमियों 8:34) यीशु हमारा मित्र बनना चाहता है तथा वह हमारी सहायता करना चाहता है ताकि हम ऐसा जीवन वयतित करें जो परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला हो । हम जहा कही भी जाते है यीशु मसीह भी पवित्र

आत्मा के द्वारा हमारे साथ हो लेता है । वह हमेशा वहां प्रार्थना करने हमारी आयुवाई करने तथा सहायता करने के लिये हम अपनी समस्या अपना खुशी और वास्तविकता में हमारे जीवनों की हर एक चीज को उस के साथ बाट सकते हैं । अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं और मसीह के सभी वारिस हैं । (देखें रोमियों 8:17)

हम कैसे प्रार्थना करें ?

एक नया मसीही होने के कारण परमेश्वर जानता है कि हम उसके विषय में बहुत कम जानते हैं तथा वह हमारी सहायता करना चाहता है । वह अति प्रसन्न होगा यदि हम उसे साधारण प्रार्थना करें और उन चीजों को मांगे जो हमें आवश्यक है । फिर भी हमें इस से अधिक बढ़ने की आवश्यकता है और प्रार्थना करना आरम्भ करें दूसरे लोगों के लिये तथा परिस्थितियों के लिये । (देखें इफिसियों 6:18) अन्ततः परमेश्वर की इच्छा है कि हम जान जाए किस प्रकार हमारे प्रार्थना जीवन में पवित्र आत्मा की निर्देशन तथा अगुवाई पाते हैं? । पवित्र आत्मा हमारा रक्षक और सलाहकार है । (देखें यूहन्ना 14:26) परमेश्वर न केवल हमारी प्रार्थना को सुनता है तथा उत्तम देता है परन्तु वह हमारी सहायता करता है कि उन्हें किस प्रकार प्रार्थना करें । बाइबल हमें सुझाव देती है ।

"प्रार्थना में लगे रहो, और धन्यवाद के साथ उस में जागृत रहो।"

(कुलुस्सियों 4:2)

सचमुच हमें चाहिए

"किसी भी बात की चिन्ता मत करो : परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्वाद के साथ परमेश्वर के सन्मुख उपस्थित किए जाएं ।" (फिलिप्पियों 4:6)

यह पद भी दर्शाता है हमारे प्रार्थना जीवन को, कि हमें परमेश्वर को हर एक बात के लिये धन्यवाद देना है जो कुछ उस ने किया है विशेषकर प्रार्थना के लिये जिसका उत्तर दिया गया है ।

सही अभिप्रेरणा

जब आप प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये प्रार्थना करें न कि अपनी प्रसन्नता के लिये । हम याकूब 4:3 में पढ़ते हैं,

"तुम मांगते हो और पाते नहीं इसलिये कि बुरी इच्छा से मांगते हो, ताकि अपने भोग–विलास में उड़ा दो ।"

परमेश्वर चाहता है कि हम सही इच्छा से प्रार्थना करें । यदि हम हिचकिचाते हुए प्रार्थना करतें है या लड़खड़ाने वाली जबान से, कोई बात नहीं है, फिर भी परमेश्वर हमारी सुनेगा और कार्य करेगा यदि हम सही इच्छा से मांगते हैं । हमें निश्चित रुप से धार्मिक भाषा की प्रयोग की आवश्यकता नहीं है जब कभी हम प्रार्थना करते हैं और हमें विशेष तौर से तैयार प्रार्थना की भी आवश्यकता नहीं है । (देखें यूहन्ना 16:24) अपनी इच्छा को जानने के लियें, अपने स्वयं से पूछें कि जो कुछ आप प्रार्थना करते हैं वह परमेश्वर की महिमा के लिए है तथा उसके राज्य की बढ़ती के लिये है अथवा नहीं ।

शुद्ध मन से प्रार्थना करें

जब हम प्रार्थना करते हैं तो हमें परमेश्वर के सन्मुख साफ तथा पवित्र होना चाहिए ताकि हम उसके सन्मुख हियाव के साथ जा सके तथा अपनी आँखों से उसे निहार सकें (देखें इब्रानियों 4:16) यदि आप ने पाप किया है तो अपने पापों को मान लें तथा परमेश्वर से क्षमा मांगे (देखें यूहन्ना 1:9) परमेश्वर हमें दूसरे को क्षमा करने के लिये कहता है कोई बात कितना भी गलत क्यों न हो, क्योंकि उस ने हमें भी मसीह में उतना ही क्षमा कर दिया है । (देखें मत्ती 6:14–15) यदि हम ऐसा करेंगे तो हियाव के साथ परमेश्वर के सन्मुख जा सकते हैं क्योंकि आगे को फिर हमारा विवेक हमें होती नहीं ठहराएगें । यदि हम परमेश्वर की इचछा के अनुसार जीवन व्यतित करते हैं तथा उसकी आज्ञा मानते हैं, तो हम कोई भी बात के लिये प्रार्थना करेंगे और हमें उसका उत्तर हमें मिलेगा । (देखें यूहन्ना 3:21–24)

क्या हमें दूसरे लोगों के साथ प्रार्थना करना चाहिए ?

"क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उन के बीच में होता हूँ ।" (मत्ती 18:20)

हम लोगों को प्रतिदिन अकेले में परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहिए । किन्तु बाइबल बताती है मसीही लोगों की झुण्ड के विषय में जो एक साथ मिल कर प्रार्थना करते अपने स्थानीय कलीसिया से प्रार्थना समाओं के विषय में विस्तृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें ।

प्रार्थना के लिये सुझाव :—

- प्रार्थना, प्रतिदिन बाइबल अध्ययन के साथ होना चाहिए।
- आप को प्रति दिन कम से कम 5 मिनट प्रार्थना में समय बिताना चाहिए। जैसे–जैसे आप का सम्बन्ध परमेश्वर के साथ जाएगा, आप पाएंगे कि पांच मिनट की प्रार्थना अधिक नहीं है। आप हर हालत में परमेश्वर के पास जाने की इच्छा को पूरा करना चाहेंगे।
- आप को ऐसी जगह खोल लेना चाहिए प्रार्थना करने के लिये जो एकान्त में हो, जहां कोई आप को वाधा न डालें।
- हमारे प्रार्थना के समय हमें खाली स्थान छोड़ना चाहिए ताकि परमेश्वर हम से बातचीत कर सकें।
- हमें पिता परमेश्वर से यीशु के नाम में प्रार्थना करना चाहिए। ऐसा करने से हमारी प्रार्थना की इच्छा को सही तौर से रखने हमें सहायता मिलती है और हमारी बाइबल भी हमें शिक्षा देती है कि इस रीति से प्रार्थना करें। (देखें यूहन्ना 14:13, 16:23)
- हमारी प्रार्थनाओं में परमेश्वर का धन्यवाद करना अच्छा है कि वह कौन है तथा परमेश्वर की स्तुति करना चाहिए जो कुछ उसने हमारे लिये तथा दूसरे के लिये किया हैं।

प्रश्न तथा संकेत :–

1. मरकुस 11:22–25 पढ़ें तब निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें–
   क. ये पद किन लोगों के लिये लागु होता है ?
   ख. प्रार्थना के द्वारा हम क्या कर सकते हैं ?
   ग. जब हम प्रार्थना करते हैं तो हमारे मन की भावना क्या होनी चाहिए ?
   घ. प्रार्थना से पहले हमें क्या करना चाहिए ?
2. यदि आप विश्वास करते है तो प्रार्थना में आप को क्या मिलेगा ? (मत्ती 21:21–22)
3. हम कैसे जान सकते हैं कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है? (1 यूहन्ना 5:14–15)
4. कितने विस्तार तक परमे वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर दे सकता है ? (इफिसियों 3:20)
5. हमारी कौन सी कमजोरी हो सकती है जिसके कारण हम अक्सर परमेश्वर से प्राप्त नहीं करते ? (याकुब 4:2)
6. मेरी प्रतिक्रिया कैसा होना चाहिए जब मैं अनुभव करता हुँ कि मैं परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना कर रहा हुँ और फिर भी मेरी प्रार्थना का उत्तर मुझे नहीं मिलता। (इब्रानियों 10:35–36)
7. किन किन बातों के लिये हमें प्रार्थना करना चाहिए ? (मत्ती 9:38, 1 तीमुथियुस 2:1–2, याकुब 1:5)
8. मत्ती 6:5–15 पढ़ें यह वह अवतरण है जहां यीशु अपने शिष्यों को शिक्षा देता है कि कैसे प्रार्थना का उत्तर दें :
   क. हमें कहां प्रार्थना करना चाहिए (पद 6)
   ख. क्या लम्बी प्रार्थना आवश्यकताओं को जानता है ? (पद 11)
   ग. हम किस से प्रार्थना करें ? (पद 9)
   घ. जब हम प्रार्थना करते हैं तो क्या अपने स्वर्गीय पिता की महिमा करना चाहिए ? (पद 9)

ङ. क्या परमेश्वर चाहता है कि हम अपने प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिये प्रार्थना करें ? (पद 11)

च. क्या हमारे पापों की क्षमा के लिये परमेश्वर से हमें प्रार्थना करना चाहिए ? (पद 12)

छ. क्या हमें शैतान का सामना करने के लिऐ तथा परीक्षा पर दृढ़ रहने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करना चाहिए ? (पद 13)

ज. क्या हमें दूसरों को क्षमा करना चाहिए ? (पद 14–15)

प्रार्थना :–

सर्व शक्तिमान परमेश्वर अपने आप को मुझ पर प्रगट करने के लिये धन्यवाद। मैं और अधिक जानना चाहता हूँ तथा हमारा सम्बन्ध बढ़ता जाए। मेरी सहायता कर कि सीख सकुँ कि कैसे प्रार्थना की जाए तथा अपना समय को नियमित रूप से निकाल सकुं इसी कार्य के लिये। मैं प्रार्थना यीशु के नाम से करता हूँ । आमीन।